नोट–किन्हींका भी अन्तर बतलानेके लिये सर्वत्र इस शैलीका अनुकरण करना चाहिये; मात्र लक्षण बतलानेसे अन्तर नहीं निकलता ।

पहली ढालकी प्रश्नावली

(१) असंज्ञी, ऊर्ध्वलोक, एकेन्द्रिय, कर्म, गति, चतुरिन्द्रिय, त्रस, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, अधोलोक, पंचेन्द्रिय, प्रत्येक, मध्यलोक, वीतराग, वैक्रियिक शरीर, साधारण और स्थावरके लक्षण बतलाओ ।

(२) साधारण (निगोद) और प्रत्येकमें, त्रस और स्थावरमें, संज्ञी और असंज्ञीमें अन्तर बतलाओ ।

(३) असंज्ञी तिर्यंच, त्रस, देव, निर्बल, निगोद, पशु, बाल्यावस्था, भवनत्रिक, मनुष्य, यौवन, वृद्धावस्था, वैमानिक, सबल, संज्ञी, स्थावर, नरकगति, नरकसम्बन्धी भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, भूमिस्पर्श तथा असुरकुमारोंके दुःख; अकाम निर्जराका फल, असुरकुमारोंका कार्य तथा गमन; नारकीके शरीरकी विशेषता और अकालमृत्युका अभाव, मंदारमाला, वैतरणी तथा शीतसे लोहेके गोलेका गल जाना–इनका स्पष्ट वर्णन करो ।

(४) अनादिकालसे संसारमें परिभ्रमण, भवनत्रिकमें उत्पन्न होना तथा स्वर्गोंमें दुःखका कारण बतलाओ ।

(५) असुरकुमारोंका गमन, सम्पूर्ण जीवराशि, गर्भ निवासका समय, यौवनावस्था, नरककी आयु, निगोदवासका समय, निगोदियाकी इन्द्रियाँ, निगोदियाकी आयु, निगोदमें एक श्वासमें जन्म-मरण तथा श्वासका परिमाण बतलाओ ।

(६) त्रसपर्यायकी दुर्लभता १-२-३-४-५ इन्द्रिय जीव, तथा शीतसे लोहेका गोला गल जानेको दृष्टांत द्वारा समझाओ।

(७) बुरे परिणामोंसे प्राप्त होने योग्य गति, ग्रन्थरचयिता, जीव-कर्म सम्बन्ध, जीवोंकी इच्छित तथा अनिच्छित वस्तु, नमस्कृत वस्तु, नरककी नदी, नरकमें जानेवाले असुरकुमार, नारकीका शरीर, निगोदियाका शरीर, निगोदसे निकलकर प्राप्त होनेवाली पर्यायें, नौ महीनेसे कम समय तक गर्भमें रहनेवाले, मिथ्यात्वी वैमानिककी भविष्यकालीन पर्याय, माता-पिता रहित जीव, सर्वाधिक दुःखका स्थान और संक्लेश परिणाम सहित मृत्यु होनेके कारण प्राप्त होने योग्य गतिका नाम बतलाओ।

(८) अपनी इच्छानुसार किसी शब्द, चरण अथवा छंदका अर्थ या भावार्थ कहो। पहली ढालका सारांश समझाओ, गतियोंके दुःखों पर एक लेख लिखो अथवा कहकर सुनाओ।

(३) मिथ्यात्व और मिथ्यादर्शनमें कोई अन्तर नहीं है; मात्र दोनों पर्यायवाचक शब्द हैं ।

(४) सुगुरुमें मिथ्यात्वादि दोष नहीं होते; किन्तु कुगुरुमें होते हैं । विद्यागुरु तो सुगुरु और कुगुरुसे भिन्न व्यक्ति हैं । मोक्षमार्गके प्रसंगमें तो मोक्षमार्गके प्रदर्शक सुगुरुसे तात्पर्य है ।

दूसरी ढालकी प्रश्नावली

(१) अगृहीत-मिथ्याचारित्र, अगृहीत-मिथ्याज्ञान, अगृहीत-मिथ्यादर्शन, कुदेव, कुगुरु, कुधर्म, गृहीत-मिथ्यादर्शन, गृहीत-मिथ्याज्ञान, गृहीत-मिथ्याचारित्र एवं जीवादि छह द्रव्य—इन सबके लक्षण बतलाओ ।

(२) मिथ्यात्व और मिथ्यादर्शनमें, अगृहीत और गृहीतमें, आत्मा और जीवमें तथा सुगुरु, कुगुरु और विद्यागुरुमें क्या अन्तर है, वह बतलाओ ।

(३) अगृहीतका नामान्तर, आत्महितका मार्ग, एकेन्द्रियको ज्ञान न माननेसे हानि, कुदेवादिकी सेवासे हानि; दूसरी ढालमें कही हुई वास्तविकता, मृत्युकालमें जीव निकलते हुए दिखाई नहीं देता उसका कारण, मिथ्यादृष्टिकी रुचि, मिथ्यादृष्टिकी अरुचि, मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्रकी सत्ताका काल; मिथ्यादृष्टिको दुःख देनेवाली वस्तु, मिथ्या-धार्मिक कार्य करने-कराने वा उसमें सम्मत होनेसे हानि तथा सात तत्त्वोंकी विपरीत श्रद्धाके प्रकारादिका स्पष्ट वर्णन करो ।

(४) आत्महित, आत्मशक्तिका विस्मरण, गृहीत मिथ्यात्व, जीवतत्त्वकी पहिचान न होनेमें किसका दोष है, तत्त्वका

प्रयोजन, दुःख, मोक्षसुखकी अप्राप्ति और संसार-परिभ्रमणके कारण दर्शाओ।

(५) मिथ्यादृष्टिका आत्मा, जन्म और मरण, कष्टदायक वस्तु आदि सम्बन्धी विचार प्रगट करो।

(६) कुगुरु, कुदेव और मिथ्याचारित्र आदिके दृष्टान्त दो। आत्महितरूप धर्मके लिये प्रथम व्यवहार होता है या निश्चय?

(७) कुगुरु तथा कुधर्मका सेवन और रागादिभाव आदिका फल बतलाओ। मिथ्यात्व पर एक लेख लिखो। अनेकान्त क्या है? राग तो बाधक ही है, तथापि व्यवहार मोक्षमार्गको अर्थात् (शुभरागको) निश्चयका हेतु क्यों कहा है?

(८) अमुक शब्द, चरण अथवा छन्दका अर्थ और भावार्थ बतलाओ। दूसरी ढालका सारांश समझाओ।

(७) सामान्य धर्म अथवा गुण तो अनेक वस्तुओंमें रहता है; किन्तु विशेष धर्म या विशेष गुण तो अमुक खास वस्तुमें ही होता है ।

(८) सम्यग्दर्शन अंगी है और निःशंकित अंग उसका एक अंग है ।

तीसरी ढालकी प्रश्नावली

(१) अजीव, अधर्म, अनायतन, अलोक, अन्तरात्मा, अरिहन्त, आकाश, आत्मा, आस्रव, आठ अंग, आठ मद, उत्तम अन्तरात्मा, उपयोग, कषाय, काल, कुल, गन्ध, चारित्रमोह, जघन्य अन्तरात्मा, जाति, जीव, मद, देवमूढ़ता, द्रव्यकर्म, निकल, निश्चयकाल, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, मोक्षमार्ग, निर्जरा, नोकर्म, परमात्मा, पाखंड़ी मूढ़ता, पुद्गल, बहिरात्मा, बन्ध, मध्यम अन्तरात्मा, मूढ़ता, मोक्ष, रस, रूप, लोकमूढ़ता, विशेष, विकलत्रय, व्यवहारकाल, सम्यग्दर्शन, शम, सच्चे देव-शास्त्र-गुरु, सुख, सकल परमात्मा, संवर, संवेग, सामान्य, सिद्ध तथा स्पर्श आदिके लक्षण बतलाओ ।

(२) अनायतन और मूढ़तामें, जाति और कुलमें, धर्म और धर्मद्रव्यमें, निश्चय और व्यवहारमें, सकल और निकलमें, सम्यग्दर्शन और निःशंकित अंगमें तथा सामान्य और विशेष आदिमें क्या अन्तर है ।

(३) अणुव्रतीका आत्मा, आत्महित, चेतनद्रव्य, निराकुलदशा अथवा स्थान, सात तत्त्व, उनका सार, धर्मका मूल, सर्वोत्तम धर्म, सम्यग्दृष्टिको नमस्कारके अयोग्य तथा हेय-उपादेय तत्त्वोंके नाम बतलाओ ।

(४) अघातिया, अंग, अजीव, अनायतन, अन्तरात्मा, अन्तरंग-परिग्रह, अमूर्तिक द्रव्य, आकाश, आत्मा, आस्रव, कर्म, कषाय, कारण, काल, कालद्रव्य, गंध, घातिया, जीवतत्त्व, द्रव्य, दुःखदायक भाव, द्रव्यकर्म, नोकर्म, परमात्मा, परिग्रह, पुद्गलके गुण, भावकर्म, प्रमाद, बहिरंग परिग्रह, मद, मिथ्यात्व, मूढ़ता, मोक्षमार्ग, योग, रूपी द्रव्य, रस, वर्ण, सम्यक्त्वके दोष और सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्रके भेद बतलाओ ।

(५) तत्त्वज्ञान होने पर भी असंयम; अव्रतीकी पूज्यता, आत्माके दुःख, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र तथा सम्यग्दृष्टिका कुदेवादिको नमस्कार न करना—आदिके कारण बतलाओ ।

(६) अमूर्तिक द्रव्य, परमात्माके ध्यानसे लाभ, मुनिका आत्मा, मूर्तिक द्रव्य, मोक्षका स्थान और उपाय, बहिरात्मपनेके त्यागका कारण; सच्चे सुखका उपाय और सम्यग्दृष्टिकी उत्पत्ति न होनेवाले स्थान—इनका स्पष्टीकरण करो ।

(७) अमुक पद, चरण अथवा छन्दका अर्थ तथा भावार्थ बतलाओ; तीसरी ढालका सारांश सुनाओ । आत्मा, मोक्षमार्ग, जीव, छह द्रव्य और सम्यक्त्वके दोष पर लेख लिखो ।

२. परिग्रहपरिमाणव्रतमें परिग्रहका जितना प्रमाण (मर्यादा) किया जाता है, उससे भी कम प्रमाण भोगोपभोगपरिमाणव्रतमें किया जाता है।

३. प्रोषधमें तो आरम्भ और विषय-कषायादिका त्याग करने पर भी एकबार भोजन किया जाता है, उपवासमें तो अन्न-जल-खाद्य और स्वाद्य –इन चारों आहारोंका सर्वथा त्याग होता है। प्रोषध-उपवासमें आरम्भ, विषय-कषाय और चारों आहारोंका त्याग तथा उसके अगले दिन और पारणेके दिन अर्थात् अगले-पिछले दिन भी एकाशन किया जाता है।

४. भोग तो एक ही बार भोगने योग्य होता है; किन्तु उपभोग बारम्बार भोगा जा सकता है। (आत्मा परवस्तुको व्यवहारसे भी नहीं भोग सकता; किन्तु मोह द्वारा, मैं इसे भोगता हूँ –ऐसा मानता है और तत्सम्बन्धी रागको, हर्ष-शोकको भोगता है। यह बतलानेके लिये उसका कथन करना सो व्यवहार है।)

चौथी ढालकी प्रश्नावली

१. अचौर्यव्रत, अणुव्रत, अतिचार, अतिथिसंविभाग, अनध्यवसाय, अनर्थदंड, अनर्थदंडव्रत, अपध्यान, अवधिज्ञान, अहिंसाणुव्रत, उपभोग, केवलज्ञान, गुणव्रत, दिग्व्रत, दुःश्रुति, देशव्रत, देशप्रत्यक्ष, परिग्रह-परिमाणाणुव्रत, परोक्ष, पापोपदेश, प्रत्यक्ष, प्रमादचर्या, प्रोषध उपवास, ब्रह्मचर्याणुव्रत, भोगोपभोग-परिमाणव्रत, भोग, मतिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, विपर्यय, व्रत, शिक्षाव्रत, श्रुतज्ञान, सकलप्रत्यक्ष, सम्यक्ज्ञान, सत्याणुव्रत,

सामायिक, संशय, स्वस्त्रीसंतोषव्रत तथा हिंसादान आदिके लक्षण बताओ ।

२. अणुव्रत, अनर्थदंडव्रत, काल, गुणव्रत, देशप्रत्यक्ष, दिशा, परोक्ष, पर्व, पात्र, प्रत्यक्ष, विकथा, व्रत, रोगत्रय, शिक्षाव्रत, सम्यक्चारित्र, सम्यग्ज्ञानके दोष और संल्लेखना दोष–आदिके भेद बतलाओ ।

३. अणुव्रत, अनर्थदंडव्रत, गुणव्रत–ऐसे नाम रखनेका कारण; अविचल ज्ञानप्राप्ति, ग्रैवेयक तक जाने पर भी सुखका अभाव, दिग्व्रत, देशव्रत, पापोपदेश–ऐसे नामोंका कारण, पुण्य-पापके फलमें हर्ष-शोकका निषेध, शिक्षाव्रत नामका कारण, सम्यग्ज्ञान, ज्ञान, ज्ञानोंकी परोक्षता-प्रत्यक्षता-देशप्रत्यक्षता और सकलप्रत्यक्षता आदिके कारण बतलाओ ।

४. अणुव्रत और महाव्रतमें, दिग्व्रत और देशव्रतमें, परिग्रह-परिमाणव्रत और भोगोपभोगपरिमाणव्रतमें, प्रोषध और उपवासमें तथा प्रोषधोपवासमें, भोग और उपभोगमें, यम और नियममें, ज्ञानी और अज्ञानीके कर्मनाशमें तथा सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानमें क्या अन्तर है–वह बतलाओ ।

५. अनध्यवसाय, मनुष्यपर्याय आदिकी दुर्लभता, विपर्यय, विषय-इच्छा, सम्यग्ज्ञान और संशयके दृष्टान्त दो ।

६. अनर्थदण्डोंका पूर्ण परिमाण, अविचल सुखका उपाय, आत्मज्ञानकी प्राप्तिका उपाय, जन्म-मरण दूर करनेका उपाय, दर्शन और ज्ञानमें पहली उत्पत्ति; धनादिकसे लाभ न होना, निरतिचार श्रावकव्रत-पालनसे लाभ, ब्रह्मचर्याणुव्रतीका विचार, भेदविज्ञानकी आवश्यकता,

मनुष्यपर्यायकी दुर्लभता तथा उसकी सफलताका उपाय, मरणसमयका कर्तव्य; वैद्य-डॉक्टरके द्वारा मरण हो; तथापि अहिंसा, शत्रुका सामना करना–न करना; सम्यग्ज्ञान, सम्यग्ज्ञान होनेका समय और उसकी महिमा, संल्लेखनाकी विधि और कर्तव्य, ज्ञानके बिना मुक्ति तथा सुखका अभाव, ज्ञानका फल तथा ज्ञानी-अज्ञानीका कर्मनाश और विषयोंकी इच्छाको शांत करनेका उपाय–आदिका वर्णन करो।

७. अचल रहनेवाला ज्ञान, अतिथिसंविभागीका दूसरा नाम, तीन रोगोंका नाश करनेवाली वस्तु, मिथ्यादृष्टि मुनि, वर्तमानमें मुक्ति हो सके ऐसा क्षेत्र, व्रतधारीको प्राप्त होनेवाली गति, प्रयोजनभूत बात, सर्वको जाननेवाला ज्ञान और सर्वोत्तम सुख देनेवाली वस्तु–इनका नाम बतलाओ।

८. अमुक शब्द, चरण अथवा पद्यका अर्थ और भावार्थ बतलाओ। चौथी ढालका सारांश कहो।

९. अणुव्रत, दिग्व्रत, बारह व्रत, शिक्षाव्रत और देशचारित्रके सम्बन्धमें जो जानते हो वह समझाओ।

सकलव्रती :–(सकलव्रतोंके धारक) रत्नत्रयकी एकतारूप स्वभावमें स्थिर रहनेवाले महाव्रतके धारक दिगम्बर मुनि वे निश्चय सकलव्रती हैं ।

अन्तर-प्रदर्शन

१. अनुप्रेक्षा और भावना पर्यायवाची शब्द हैं; उनमें कोई अन्तर नहीं है ।

२. धर्मभावनामें तो बारम्बार विचारकी मुख्यता है और धर्ममें निज गुणोंमें स्थिर होनेकी प्रधानता है ।

३. व्यवहार सकलव्रतमें तो पापोंका सर्वदेश त्याग किया जाता है और व्यवहार अणुव्रतमें उनका एकदेश त्याग किया जाता है; इतना इन दोनोंमें अन्तर है ।

पाँचवीं ढालकी प्रश्नावली

१. अनित्यभावना, अन्यत्वभावना, अविपाकनिर्जरा, अकामनिर्जरा, अशरणभावना, अशुचिभावना, आस्रवभावना, एकत्वभावना, धर्मभावना, निश्चयधर्म, बोधिदुर्लभभावना, लोकभावना, संवरभावना, सकामनिर्जरा, सविपाकनिर्जरा आदिके लक्षण समझाओ ।

२. सकलव्रतमें और विकलव्रतमें, अनुप्रेक्षामें और भावनामें, धर्ममें और धर्मद्रव्यमें, धर्ममें और धर्मभावनामें तथा एकत्वभावना और अन्यत्वभावनामें अन्तर बतलाओ ।

३. अनुप्रेक्षा, अनित्यता, अन्यत्व और अशरणपनेका स्वरूप दृष्टान्त सहित समझाओ ।

४. अकाम निर्जराका निष्प्रयोजनपना, अचल सुखकी प्राप्ति, कर्मके आस्रवका निरोध, पुण्यके त्यागका उपदेश और सांसारिक सुखोंकी असारता आदिके कारण बतलाओ ।

५. अमुक भावनाका विचार और लाभ, आत्मज्ञानकी प्राप्तिका समय और लाभ, इन्द्रधनुष, औषधि सेवनकी सार्थकता-निरर्थकता, बारह भावनाओंके चिंतवनसे लाभ, मंत्रादिकी सार्थकता और निरर्थकता । वैराग्यकी वृद्धिका उपाय, इन्द्रधनुष्य तथा बिजलीका दृष्टान्त क्या समझाते हैं? लोकका कर्ता-हर्ता माननेसे हानि, समता न रखनेसे हानि, सांसारिक सुखका परिणाम और मोक्ष-सुखकी प्राप्तिका समय-आदिका स्पष्ट वर्णन करो ।

६. अमुक शब्द, चरण तथा छन्दका अर्थ-भावार्थ समझाओ । लोकका नकशा बनाओ और पाँचवीं ढालका सारांश कहो ।

वचनगुप्ति–बोलनेकी इच्छाको रोकना अर्थात् आत्मामें लीनता।

शुक्लध्यान–अत्यन्त निर्मल, वीतरागता पूर्ण ध्यान।

शुद्ध उपयोग–शुभ-अशुभ राग-द्वेषादिसे रहित आत्माकी चारित्र-परिणति।

समिति–प्रमादरहित यत्नाचारसहित सम्यक् प्रवृत्ति।

स्वरूपाचरणचारित्र–आत्म – स्वरूपमें एकाग्रतापूर्वक रमणता –लीनता।

अन्तर-प्रदर्शन

१. ''नय'' तो ज्ञाता अर्थात् जाननेवाला है और ''निक्षेप'' ज्ञेय अर्थात् ज्ञानमें ज्ञात होने योग्य है।

२. प्रमाण तो वस्तुके सामान्य-विशेष समस्त भागोंको जानता है; किन्तु नय वस्तुके एक भागको मुख्य रखकर जानता है।

३. शुभ उपयोग तो बन्धका अथवा संसारका कारण है; किन्तु शुद्ध उपयोग निर्जरा और मोक्षका कारण है।

प्रश्नावली

१. अंतरंग तप, अनुभव, आवश्यक, गुप्ति, गुप्तियाँ, तप, द्रव्यहिंसा, अहिंसा, ध्यानस्थ मुनि, नय, निश्चय, आत्मचारित्र, परिग्रह, प्रमाण, प्रमाद, प्रतिक्रमण, बहिरंग तप, भावहिंसा, अहिंसा, महाव्रत, पंच महाव्रत, रत्नत्रय, शुद्धात्म अनुभव, शुद्ध उपयोग, शुक्लध्यान, समिति और समितियोंके लक्षण बतलाओ।

२. अघातिया, आवश्यक, उपयोग, कायगुप्ति, छियालीस दोष, तप, धर्म, परिग्रह, प्रमाद, प्रमाण, मुनिक्रिया, महाव्रत, रत्नत्रय, शील, शेष गुण, समिति, साधुगुण और सिद्धगुणके भेद कहो ।

३. नय और निक्षेपमें, प्रमाण और नयमें, ज्ञान और आत्मामें, शुभ उपयोग और शुद्ध उपयोगमें अन्तर बतलाओ ।

४. आठवीं पृथ्वी, ग्रन्थ, ग्रन्थकार, ग्रन्थ-छन्द, ग्रन्थ-प्रकरण, सर्वोत्तम तप, सर्वोत्तम धर्म, संयमका उपकरण, शुचिका उपकरण और ज्ञानका उपकरण—आदिके नाम बतलाओ ।

५. ध्यानस्थ मुनि, सम्यग्ज्ञान और सिद्धका सुख आदिके दृष्टान्त बतालाओ ।

६. छह ढालोंके नाम, मुनिके पींछी आदिका अपरिग्रहपना, रत्नत्रयके नाम, श्रावकको नग्नताका अभाव आदिके सिर्फ कारण बतलाओ ।

७. अरिहन्त दशाका समय, अन्तिम उपदेश, आत्मस्थिरताके समयका सुख, केशलोंचका समय, कर्मनाशसे उत्पन्न होनेवाले गुणोंका विभाग, ग्रन्थ-रचनाका काल, जीवकी नित्यता तथा अमूर्तिकपना, परिषह-जयका फल, रागरूपी अग्निकी शान्तिका उपाय, शुद्ध आत्मा, शुद्ध उपयोगका विचार और दशा, सकलचारित्र, सिद्धोंकी आयु, निवासस्थान और समय तथा स्वरूपाचरणचारित्रादिका वर्णन करो ।

८. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, देशचारित्र, सकलचारित्र, चार गति, स्वरूपाचरणचारित्र, बारह व्रत,

बारह भावना, मिथ्यात्व और मोक्षादि विषयों पर लेख लिखो।

९. दिगम्बर जैन मुनिका भोजन, समता, विहार, नग्नतासे हानि-लाभ; दिगम्बर जैन मुनिको रात्रिगमनका विधि या निषेध, दिगम्बर जैन मुनिको घड़ी, चटाई (आसन) या चश्मा आदि रखनेका विधि या निषेध–आदि बातोंका स्पष्टीकरण करो।

१०. अमुक शब्द, चरण और छन्दका अर्थ या भावार्थ कहो। छठवीं ढालका सारांश बतलाओ।

इति कविवर पण्डित दौलतराम विरचित

छहढालाके गुजराती–अनुवादका हिन्दी-अनुवाद